बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन

भूमिका

1. विषय उपस्थापन

1.1 विषय प्रस्तावना

बिलासपुर क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के विशिष्ट क्षेत्रों में से है । यह क्षेत्र अपनी संस्कृति, भौगोलिक एवं स्थानीय विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है । लोकगीतों की दृष्टि से बिलासपुर क्षेत्र का विशेष महत्व है, चूँकि लोकगीतों में लोक-जीवन का अतीत मुखरित होता है । लोकगीत लोकसाहित्य की महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें लोकजीवन के सुख-दुःख, आशा-निराशा, मिलन-वियोगादि भावनाएँ अभिव्यक्ति पाती है । प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय "बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोक जीवन" है । इन लोगीतों में बिलासपुरी लोकजीवन के हृदय के सच्चे उद्गार अभिव्यक्त हुए हैं । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में "बिलासपुरी" शब्द का प्रयोग उसके व्यापक अर्थ में किया गया है, अतः यहाँ इसका अर्थ सम्पूर्ण "बिलासपुर क्षेत्र" है । बिलासपुरी लोकगीत लोक-भावना के स्वच्छंद एवं निश्चल प्रवाह को अजस्र गति से प्रवाहित करते हैं । लोक-जीवन के प्रत्येक पक्ष का निर्वाह इन लोकगीतों में हुआ है । इन लोकगीतों में बिलासपुरी लोक-जीवन की मूर्तता एवं सजीवता गुंथी है। बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत वहाँ के लोकजीवन के सजीव, अकृत्रिम, अनगढ़, प्राचीनता, यथार्थता एवं स्वाभाविकता के जीते-जागते नमूने हैं । इन लोकगीतों में वहाँ के लोकजीवन के सम्पूर्ण पक्षों को उजागर करने की क्षमता है । बिलासपुरी लोकगीत वहाँ के लोकजीवन की अमूल्य सम्पत्ति होने के कारण उसकी प्राचीन संस्कृति के सजीव चित्र हैं ।

किसी भी क्षेत्र के लोकगीत उस क्षेत्र के जनसाधारण के अन्तर्मन की यथार्थ भावनाएँ एवं उद्‌गार होते हैं। किसी भी जाति की संस्कृति एवं सभ्यता को वहाँ प्रचलित लोकगीतों के माध्यम से समझा जा सकता है। लोकगीत लोकजीवन की अनमोल धरोहर हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी परम्परागत् रूप से सौंपी एवं सहेजी जाती है। लोकजीवन की स्वाभाविकता, सहजता, स्वच्छन्दता, निश्छलता, सरलता एवं प्रकृति इन लोकगीतों में उद्वेलित होती है। लोक गीतों में लोकजीवन का सर्वांग स्वरूप तथा लोकजीवन की वास्तविक झलक निहित रहती है। यद्यपि लोकगीतों की गेयता का ढंग समय के साथ-साथ परिवर्तित होता रहता है किन्तु विषयों की पुरातनता एवं ऐतिहासिकता ज्यों-की-त्यों स्थिर रहती है। इन लोकगीतों में लोकसाहित्य की विपुल सामग्री अन्तर्निहित रहती है। अतः लोक गीतों के माध्यम से हम लोकजीवन में प्रचलित-संस्कारों, त्यौहारों, ऋतुओं, जातियों एवं धार्मिक विश्वासों आदि का रहस्योद्‌घाटन पाते हैं। लोकगीत लोकजीवन की भावात्मक विशेषताओं तथा स्वर-लालित्य के लिए सदैव ही लोकप्रसिद्ध रहे हैं। ये गीत लोकाभिव्यक्ति के सरल एवं प्रमुख साधन हैं। किसी भी जाति के लोक-गीतों में उस जाति-विशेष के लोगों के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की झलक देखी जा सकती है। वास्तव में किसी भी क्षेत्र के लोकगीत लोकसाहित्य रूपी सागर की यह धारा है, जो युग-युगान्तरों से मौलिक रूप में लोकजीवन के मध्य प्रवाहित रहती है। अतः लोकगीतों में लोकजीवन के चेतन-अचेतन मन की अभिव्यंजना हुई है।

हिमाचल प्रदेश ग्रामों का प्रदेश है। हमारे प्रदेश की अधिकतर जनता ग्रामों में ही निवास करती है। यहाँ का ग्रामीण जीवन संगीतमय है। यहाँ अनेक धर्मों तथा जातियों के लोग निवास करते हैं। सभी क्षेत्रों तथा जातियों के संस्कार, परम्पराएँ तथा रीति-रिवाज एक-दूसरे से कुछ-कुछ मिलते-जुलते ही हैं। यह प्रदेश विभिन्न त्यौहारों, उत्सवों तथा संस्कारों के लिए लोकप्रिय है। इस प्रदेश के

प्रत्येक क्षेत्र में उत्सव, त्यौहार, एवं संस्कार आदि के सुअवसर पर समयोजित लोकगीत प्रचलित हैं, जिनको गाए बिना यहाँ उत्सव-विशेष को पूर्णता नहीं मानी जाती है । बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत भी इसके अपवाद नहीं है । मुख्यत: लोकगीत लोकजीवन के मनोरंजन व मनोविनोद के मुख्य आधार तथा साधन हैं । विभिन्न महीनों में ऋतु-परिवर्तन के अनुसार लोकगीत प्रचलित हैं । विभिन्न जातियों में जाति-विशेष के गीत प्रचलित हैं । इसके अतिरिक्त संस्कार गीत जो संस्कार-विशेष के शुभावसरों पर गाए जाते हैं । नि:सन्देह लोकगीत लोकजीवन के विविध पक्षों को उजागर करते हैं । लोकगीतों के माध्यम से लोक-जीवन को उसकी समग्रता में समझने में सहयोग मिलता है ।

प्रस्ताविक शोध-प्रबन्ध में "बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन" के प्रत्येक हाव-भाव, आचार-विचार, हर्ष-विषाद, हँसी-रोदन इत्यादि विभिन्न मनोभावों को अभिव्यंजित किया गया है । अत: प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में बिलासपुर क्षेत्र के लोकजीवन को लोकगीतों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है ।

1.2 सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण:

बिलासपुर क्षेत्र के लोक साहित्य का यत्किंचित् अध्ययन, संकलन, संपादन तथा विवेचन तो हुआ, किन्तु अभी तक लोकगीतों का पृथक रूप से समीक्षात्मक, विवेचनात्मक तथा विश्लेषणात्मक शोध प्रबन्ध उपलब्ध नहीं है । लोकगीतों का लोकजीवन की दृष्टि से विशेषत: महत्व है । इन लोकगीतों में लोकजीवन का संपूर्ण स्वरूप उजागर होता है । अत: प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "बिलासपुर क्षेत्र के लोक-गीतों में लोकजीवन" विषय की उपयोगिता स्वयं स्पष्ट हो जाती है ।

हिमाचल प्रदेश भारत के प्रमुख राज्यों में से है । हिमाचल प्रदेश अपनी प्राचीन संस्कृति एवं परम्पराओं के लिए प्रसिद्ध रहा है । हिमाचल के विभिन्न

क्षेत्रों के लोक साहित्य को लेकर कई पुस्तकें एवं शोध प्रबन्ध प्रकाशित हुई हैं, जिनसे यहाँ के विभिन्न क्षेत्रों की ऐतिहासिक एवं प्राचीन संस्कृति की महत्ता पर प्रकाश पड़ता है। हिमाचल के प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के लोकसाहित्य द्वारा ही जाना जा सकता है। हिमाचल के अलग-अलग क्षेत्रों को लेकर जो ग्रंथ एवं पुस्तकें रची गई हैं वे निम्नवत हैं :- डॉ० बंशी राम शर्मा, किन्नर लोक साहित्य, (बिलासपुर: ललित कला प्रकाशन, 1976)

सर्वप्रथम डॉ० बंशी राम शर्मा का शोध ग्रंथ "किन्नर लोकसाहित्य" हिमाचल प्रदेश के किन्नौर क्षेत्र के जनजीवन के पौराणिक एवं ऐतिहासिक पक्ष को तो विवेचित करता है, इसके साथ-साथ किन्नर लोकसाहित्य के सभी अंगों का अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करता है। डॉ० पदमचन्द्र कश्यप, कुल्लई लोक साहित्य, (दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1972)

डॉ० पदमचन्द्र कश्यप का "कुल्लुई लोक साहित्य कुल्लू घाटी के इतिहास एवं लोकजीवन को विवेचित करता है। कुल्लू क्षेत्र के लोक साहित्य के सभी पहलुओं का वर्णन करता है। डॉ० बी०एल० कपूर, हिमाचल : इतिहास और परम्परा, (दिल्ली: सन्मार्ग प्रकाशन, 1971)

डॉ० बी०एल० कपूर का "हिमाचल: इतिहास और परम्परा" ग्रंथ हिमाचल के सभी क्षेत्रों के इतिहास, परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का अध्ययन एवं विश्लेषण करता है। प्रो० हरिराम जेस्टा, हिमाचल के लोकनृत्य, (दिल्ली: सन्मार्ग प्रकाशन, 1971)

प्रो० हरि राम जेस्टा की पुस्तक "हिमाचल के लोकनृत्य" में हिमाचल के कुल्लू, चम्बा, कांगड़ा, शिमला, सिरमौर आदि क्षेत्रों के लोकनृत्यों को स्थानीय रंग-रूप, वेशभूषा, अलंकरण-संभरण के साथ विवेचित किया गया है।

डॉ० एम०आर० ठाकुर, हिमाचल के लोकनाट्य और लोकानुरंजन (दिल्ली: हिमाचल पुस्तक भण्डार, 1981)

श्री एम०आर० ठाकुर द्वारा लिखित "हिमाचल के लोकनाट्य और लोकानुरंजन" में प्राचीन संस्कृति के अवशेषों हिमाचल के लोक-नाट्यों का परिचय संयोजित करने का प्रयत्न किया गया है तथा साथ ही पारम्परिक नाटकों तथा अनुष्ठानों का भी विवरण किया गया है ।

डॉ० एम०आर, ठाकुर, हिमाचल लोकगीत भाग-I, (बिलासपुर : जीवन प्रिंटिंग प्रेस, 1983)

श्री एम०आर० ठाकुर द्वारा संपादित "हिमाचली लोकगीत" पुस्तक में हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीतों का संग्रह है, जिसमें मुख्यतः धार्मिक गीत, लोकगाथा, संस्कार गीत, श्रृंगार गीत, नृत्य गीत, त्यौहार एवं प्रदेश महिमा सम्बन्धी लोकगीतों की व्याख्या की गई है ।

हरिकृष्ण मिट्ठू, हिमाचल के लोकगीत, (शिमला: निर्देशक लोकसम्पर्क विभाग, 1960)

श्री हरिकृष्ण मिट्ठू द्वारा संपादित पुस्तक "हिमाचली लोकगीत" में हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों के कुछ लोकगीतों को संग्रहित किया गया है ।

डॉ० ओम प्रकाश हाण्डा, पहाड़ी लोकगीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1981)

श्री ओम प्रकाश हाण्डा की "पहाड़ी लोकगीत: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पुस्तक हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के लोकगीतों में गुण-विधान, प्रतीक-बिम्ब योजना तथा रस-विधान आदि दृष्टि से अध्ययन एवं विश्लेषण प्रस्तुत करती है ।

डॉ0 देवराज शर्मा, हिमाचल अतीत वर्तमान-भविष्य (बिलासपुर: किरण बुक डिपो हि0प्र0, 1975)

श्री देवराज शर्मा की "हिमाचल अतीत वर्तमान-भविष्य एक झलक" पुस्तक आदिकाल से 1974 ई0 तक के हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के इतिहास पर ही प्रकाश नहीं डालती, अपितु प्रदेश की संस्कृति, धर्म, कला एवं स्वतन्त्रता-संग्राम में योगदान आदि विषयों को भी उद्घाटित करती है। श्री देवराज शर्मा ने "घाटियाँ री गूँजा" नामक संग्रह में बिलासपुर क्षेत्र में प्रचलित लोक कथाओं को संग्रहित किया है। श्री शर्मा की "बगदियाँ धाराँ" पुस्तक में बिलासपुर क्षेत्र की प्रसिद्ध गुग्गा-गाथा को संकलित करके इसके सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिकता महत्ता पर प्रकाश डाला है।

डॉ0 श्री राम शर्मा, बिलासपुर जनपद के लोकसाहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन, 1979)

डॉ0 श्री राम शर्मा का पी-एच0डी0 उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबन्ध "बिलासपुर जनपद के लोकसाहित्य का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन" बिलासपुर क्षेत्र के इतिहास, लोकसाहित्य के सभी अंगों लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोक नाटक तथा लोकोक्तियों आदि का सामाजिक तथा सांस्कृतिक अध्ययन एवं मूल्यांकन करता है।

इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश से समय-समय पर संपादित एवं प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ हैं, जिनमें यदा-कदा बिलासपुर क्षेत्र से सम्बद्ध सामान्य तथा समीक्षात्मक लेख प्रकाशित होते रहते हैं। प्रमुखतः हिमप्रस्थ, हिमभारती, हिमसुमन तथा सोमसी इत्यादि पत्रिकाएँ हैं, जिनमें हिमाचल प्रदेश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित साधारण, मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

१.३ विषय परिसीमन:

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में विषयानुसार सामग्री का चयन किया गया है। सर्वप्रथम बिलासपुर क्षेत्र का सामान्य परिचय दिया गया है। लोकसाहित्य अर्थ एवं वर्गीकरण सैद्धांतिक आधार पर किया गया है। विषयानुकूल लोकगीतों का सैद्धान्तिक आधार पर वर्गीकरण तथा लोकजीवन का अर्थ तथा बिलासपुर क्षेत्र के लोकजीवन के आधार पर लोकगीतों का वर्गीकरण करके उनका समीक्षात्मक विवेचन एवं विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्ताविक शोध-प्रबन्ध में सैद्धान्तिक पक्ष की प्रधानता तथा ऐतिहासिक पक्ष की गौणता है। बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोक-जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्मतर अनुभूति को अभिव्यंजित करने का प्रयास किया गया है। बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन से सम्बद्ध प्रत्यक्ष पक्ष को उजागर एवं उद्घाटित करने का भरसक प्रयत्न किया गया है इन लोकगीतों में लोकजीवन का सच्चा व यथार्थ अर्थ एवं सार-तत्व ढूँढने का यथासम्भव प्रयास किया गया है। लोकगीतों को बिलासपुरी लोकजीवन के आधार पर मूल्यांकित एवं विश्लेषित किया गया है। लोकगीतों को बिलासपुर क्षेत्र के विविध भागों के निवासियों से श्रवण करके लिपिबद्ध किया गया है, लोकगीतों का अर्थ स्पष्ट करते समय लोकजीवन के भावों के अनुकूल यथायोग्य व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

यही प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की विषय-सीमा है।

१.४ अध्ययन का महत्व:

किसी भी देश के लोकगीत उस देश के लोकजीवन के अंत:करण के पुनीत उद्गार होते हैं। वे उनकी आन्तरिक भावनाओं के सच्चे प्रतीक व बिम्ब होते हैं किसी देश या प्रदेश संस्कृति को जानने के लिए उस देश या प्रदेश के लोकगीतों का अध्ययन करना अति आवश्यक होता है। इन लोकगीतों में जनसाधारण के हृदय

की भावनाएँ संलिप्त एवं स्पन्दित होती हैं । लोकगीतों में लोकजीवन की संस्कृति झाँकती है । अतः लोकगीतों का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यंत आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है । इन लोकगीतों को तिरस्कृत करके हमने अपनी संस्कृति को विस्मृत किया है, जोकि कदाचित् उचित नहींहै ।

बिलासपुर क्षेत्र के लोकसाहित्य में वहाँ का लोकजीवन ओतप्रोत है । लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाटक एवं लोकोक्तियाँ लोकसाहित्य के महत्वपूर्ण अंग हैं । ये सभी अंग अपने आप में संपूर्णता लिए हुए हैं । लोकसाहित्य की इन सभी विधाओं का पृथक्-पृथक् अध्ययन एंव विश्लेषण करना अति आवश्यक है, तभी इनकी महत्ता ज्ञात होगी ।

एम०फिल० में मेरे लघु शोध-प्रबन्ध का विषय "बिलासपुर क्षेत्र के संस्कार गीतों में लोकजीवन" रहा है । तभी से मेरी रूचि एवं उत्सुकता बिलासपुरी लोक गीतों के प्रति बढ़ती ही गई है । इन लोकगीतों को क्षेत्र बड़ा व्यापक है । इन लोकगीतों के माध्यम से बिलासपुरीजीवन की मर्मांत्मक परख भलीभाँति की जा सकती है ।अतः प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषय "बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों में लोकजीवन" को ही अपने अध्ययन एवं विश्लेषण के लिए चुनाहै । बिलासपुरी लोकगीत वहाँ के लोकजीवन की सर्वांगीणता के पूरक हैं, इन लोकगीतों में लोक नेअपनी भावनाओं तथा उमंगों को सुन्दर या असुन्दर शब्दों में व्यक्त एवं वर्णित किया है ।इन लोकगीतों में बिलासपुरी लोकजीवन की स्थानीय एवं आँचलिक विशिष्टताएँ उद्घाटित हुई हैं ।

इन गीतों में स्थानीय मिट्टी की सौंधी गंध को सूँघा जा सकता है । बिलासपुरी लोकगीतों में लोक के मनोभावों का लेखा-जोखा तथा उनकी रूचि-अरूचि का आन्तरिक तथा बाह्य रूप दृष्टिगत् होता है । ये लोकगीत निज तथा पर की संकीर्ण सीमा का परित्याग करके संपूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं । अतः इन लोकगीतों का लोकजीवन की दृष्टि से विशेष महत्व है ।

उपर्युक्त आधार पर प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के अध्ययन का महत्व स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है । आधुनिक युग में इन लोकगीतों की विशेष महत्ता है । इन लोकगीतों के प्रति चिरकाल सेही हमारी उपेक्षा रही है । लोकगीतों को तिरस्कृत करके हमने कितनी ही अमूल्य गीत रूपी मणियों को सदैव के लिए विलुप्त कर दिया है, अभी भी समय है, जब हम इस खोयी हुई एवं विस्मृत गीत रूपी निधियों की खोज-बीन करके तथा इन्हें लेखनीबद्ध करके सदा के लिए सुरक्षित, संरक्षित एवं जीवित रखने में समर्थ हो सकते हैं । यही अभाव मेरे हृदय में निरन्तर खटकता रहा है । अतः इसी के परिणामस्वरूप इन विस्मृत गीतों को खोजने या ढूँढ निकालने के कार्य का निर्णय लिया है । इस प्रयास में मैं कहाँ तक सफल रही हूँ इसका निर्णय विद्वजनों करेंगे ।

1.5 सामग्री: स्त्रोत एवं परिसीमाएँ:

लोकगीत अब तक अलिखित एवं मौखिक साहित्य रहा है । बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीत भी इसका अपवाद नहीं हैं । इन लोकगीतों में बिलासपुर क्षेत्र की प्राचीन संस्कृति, परम्पराएँ तथारीति-रिवाज सम्बद्ध हैं । बिलासपुर क्षेत्र के लोकजीवन के प्रत्येक पक्ष को ये लोकगीत उजागर करते हैं । अतः इन्हें एकत्रित करके ही हम यहाँ के जीवन को समझ पाएँगे ।

लोकगीतों के संग्रह की अनेक कठिनाइयाँ हैं । लोकगीत अलिखित होने के कारण इन्हें ग्रामीणों से श्रवण करके ही लेखनीबद्ध किया जासकता है । आधुनिक युग में लोकगीतकारों का प्रायः अभाव होता जा रहा है । वर्तमानयुग के नवशिक्षित नर-नारियों के पास इन लोकगीत रूपी अनमोल निधियों का नितांत अभाव है । केवल ग्रामीणजनों विशेषतः प्रौढ़ों के पास ये मणियाँ आज भी सुरक्षित, संरक्षित एवं प्रचलित हैं । अतः इन लोकगीत रूपी रत्नों को सुरक्षित रखने के लिए शीघ्रातिशीघ्र लिपिबद्ध करने का प्रयास करना होगा ।

लोकगीतकारों की संकुचित या संकीर्ण मनोवृति भी लोकगीत रूपी साहित्य को संग्रहित करने में बाधक सिद्ध हुई है । लोकगीतकार को अपने संकीर्ण दृष्टिकोण को परिवर्तित करना होगा, तभी हम अपनी प्राचीन समृद्ध संस्कृति को संरक्षण दे पाएंगे ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की सामग्री बिलासपुर क्षेत्र के साधारण जनों से ही उपलब्ध की गई है , क्योंकि लोकगीत किसी एक की सम्पत्ति नहीं होते, अपितु सम्पूर्ण लोक या समाज की साँझी सम्पत्ति हैं । बिलासपुर क्षेत्र के विभिन्न गाँव के नर-नारियों के सहयोग से ही इन लोकगीतों को एकत्रित एवं लिपिबद्ध किया गया है । चूँकि बिलासपुर क्षेत्र में विभिन्न वर्गों एवं जातियों के लोग इन्हीं गाँव में ही निवास करते हैं । बिलासपुर क्षेत्र तथा उसमें निवास करने वाले जनसाधारण ही मेरे इस प्रस्तुत अध्ययन की सामग्री के स्रोत तथा समस्त बिलासपुर क्षेत्र इसकी सीमा है ।

1.6 अध्ययन का अनुक्रमः

सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को नौ अध्यायों में विभक्त किया गया है ।

शोध प्रबन्ध का प्रारम्भ भूमिका के अन्तर्गत विषय उपस्थापन से किया गया है, जिसमें विषय-प्रस्तावना, सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण, विषय-परिसीमन, अध्ययन का महत्त्व, सामग्रीः स्त्रोत एवं सीमाएँ, अध्ययन का अनुक्रम-प्रस्तुत करते हुए अंत में शोध प्रबन्ध लेखन मेंअपनाई गई शोध प्रविधि को दिया गया है ।

पहले अध्याय में बिलासपुर क्षेत्रः एक सामान्य परिचय के अन्तर्गत बिलासपुर क्षेत्र के नामकरण, भौगोलिक स्थिति, सामाजिक-पारिवारिक जीवन, प्रमुख त्योहारों एवं मेलों का अध्ययन एंव विवेचन प्रस्तुत किया गया है ।

दूसरा अध्याय लोकसाहित्य: स्वरूप एवं वर्गीकरण में लोकसाहित्य के अर्थ, स्वरूप उद्भव, विकास, महत्वएवं विशेषताएँ तथा लोकसाहित्य का वर्गीकरण किया गया है, जिसके-अन्तर्गत लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाटक तथा लोकोक्तियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है ।

तीसरा अध्याय लोकगीत: स्वरूप एवं वर्गीकरण से सम्बन्धित है, जिसमें लोकगीत: अर्थ, स्वरूप, उद्भव, विकास, महत्व तथा वर्गीकरण किया गया है । इसी अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के लोकगीतों के वर्गीकरण केअन्तर्गत संस्कार, ऋतु, भक्ति, श्रम, जाति तथा अन्य गीतों को प्रस्तुत किया गया है ।

चौथे अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के लोक-गीतों में लोकजीवन के अन्तर्गत लोकगीत तथा लोकजीवन, लोकगीतों में लोकजीवन तथा लोकजीवन के आधार पर लोकगीतों का वर्गीकरण संस्कारगीत, ऋतु गीत, भक्तिगीत, श्रम एवं जाति गीत तथा अन्य गीतों को क्रमानुसार प्रस्तुत किया गया है ।

पाँचवाँ अध्याय संस्कार गीतों में लोकजीवन के अन्तर्गत बिलासपुर क्षेत्र के संस्कार गीतों (जन्म, कनबाल, विवाह तथा मृत्यु) में लोकजीवन को दर्शाया गया है ।

छठे अध्याय में बिलासपुर क्षेत्र के ऋतु गीतों में लोकजीवन केअन्तर्गत बारहमासी मुख्यत: चैत्र, वैसाख तथा सावनादि ऋतुओं के गीतों और प्रमुख त्यौहार एवं मेलों के गीत तथा प्रकृति गीतों में श्रृंगार के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों को वर्णित किया गया है ।

सातवाँ अध्याय भक्तिगीतों में लोकजीवन से सम्बन्धित है, जिसमें देवी, देवता तथा धार्मिक ज्ञान-वैराग्य से पूर्ण भक्ति गीतों में लोकजीवन को दर्शाया गया है ।

आठवें अध्याय में श्रम एवं जाति गीतों में लोकजीवन दर्शाया गया है। श्रमगीतों के अन्तर्गत लोकजीवन में प्रचलित कृषि से सम्बन्धित, चरवाहों, चक्की-चरखें तथा पालने केगीत लिए गए हैं। जाति गीतों में लोकजीवन के अन्तर्गत बिलासपुर क्षेत्र में रहने वाली जाति-विशेष ब्राह्मण, राजपूत, जुलाहा, चमार, कूजर तथा मुसलमान आदि के गीतों को प्रस्तुत किया है।

नौवें अध्याय में अन्य गीतों में लोकजीवन के अन्तर्गत हास्य-व्यंग्य गीत, पारिवारिक तथा सामाजिक रीतियों के गीत, नारी-चेतना, ऐतिहासिक एवं राजनीतिक गीतों में लोकजीवन को दर्शाया गया है।

अंत में संपूर्ण अध्यायों का उपसंहार तथा सहायक ग्रन्थ-सूची दी गई है। संदर्भ ग्रन्थ सूची केअन्तर्गत हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी ग्रन्थ तथा सम्बन्धित पत्रिकाओं को क्रमानुसार दिया गया है।

शोध प्रबन्ध लेखन प्रविधि:

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध लेखन में मूलत: एम०एल०ए० स्टाइल सीट (हैदराबाद) पर आधारित शोध-प्रविधि को अपनाया गया है। प्रस्तुत शोध की विषय उपस्थापना, पाद-टिप्पणी, संदर्भिका आदि का प्रयोग इसी के अनुरूप किया गया है।

(शोभा भारद्वाज)